

**लो**कतांत्रिक नागरिकता (सीएमसीएंग युवा नागरिक मीटर, 2015<sup>ii</sup>) में 15 वर्षीय स्कूल जाने वाला शहरी भारतीय किशोर कितना सफल रहता है, इस पर एक भली-भाँति उद्भूत और स्वीकृत अध्ययन से हमें पता चलता है कि लोकतांत्रिक नागरिकता के स्कोर या अंकों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाली तीन मददगार स्थितियाँ इस प्रकार हैं :

- उन्हें स्कूल या घर में मारा-पीटा नहीं जाता।
- वे कक्षा में खुलकर सवाल पूछने और बिना किसी भय के अपने विचारों को साझा कर पाते हैं।
- अखबार पढ़ते हैं, टीवी (समाचार और समसामयिक मामले) देखते हैं।

इन अंकों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले अन्य कारक केवल ये थे : छोटे शहरों के बच्चों ने बड़े शहरों के बच्चों की तुलना में थोड़ा बेहतर प्रदर्शन किया और हाँ, कुल मिलाकर, लड़कियों ने लड़कों की तुलना में थोड़े अधिक अंक पाए। किसी भी चीज़ ने वास्तव में अंकों को प्रभावित नहीं किया – न तो शिक्षा बोर्ड, न ही उत्तरदाताओं के समुदाय या जातियाँ, न ही उनका वर्ग/आर्थिक पृष्ठभूमि और न ही माता-पिता की शैक्षिक योग्यता या यह बात कि वे देश के किस हिस्से से आए थे।

ऐसे कई अध्ययन हैं जो बताते हैं कि नागरिकता की शिक्षा जल्दी शुरू होनी चाहिए और स्कूल एवं कक्षाएँ लोकतांत्रिक जीवन शैली और सोच के महत्वपूर्ण आधार हैं। सतत विकास लक्ष्यों, बाल अधिकारों और बच्चों की अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता और उन्हें सुरक्षित करने की उनकी क्षमता के बीच स्पष्ट सम्बन्ध हैं।

मैं यहाँ नागरिकता शिक्षा के कुछ प्रमुख मूलभूत अंगों पर ध्यान दूँगी। हालाँकि यह लेख प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है, लेकिन उम्मीद है कि यह सभी कक्षाओं के शिक्षकों के लिए उपयोगी होगा।

## नागरिकता के मूलभूत अंग

राज्य के साथ, समाज में एक-दूसरे के साथ और न्याय, समानता, स्वतंत्रता आदि के विचारों के साथ नागरिकों की भागीदारी

और जुड़ाव बहुत जटिल और बहुआयामी हैं। इसलिए यह तार्किक ही है कि लोकतंत्र की शिक्षा भी चुनौतीपूर्ण और जटिल है। यहाँ पर मैं शिक्षकों के लिए नागरिकता की शिक्षा देने हेतु पाँच ऐसे सरल और व्यावहारिक लेकिन सशक्त तरीके साझा कर रही हूँ जिनके केन्द्र में शिक्षक और कक्षा ही हैं। शिक्षक इन पर सोच-विचार करके इन्हें लागू करने का प्रयास कर सकते हैं।

## कक्षा में स्वयं से प्रेम और लचीलापन

बहुत से बच्चे दुखी रहते हैं, लेकिन शिक्षक मित्रो, क्या आप पूछते हैं, सुनते हैं?

यह एक प्राथमिक कक्षा की कहानी है। मैजिक बॉक्स एक ऐसा कार्यक्रम है जिसका नेतृत्व शिक्षक करते हैं। यह प्रतिदिन 10 मिनट किया जाता है। इसमें नागरिकता और जीवन-कौशल से सम्बन्धित रोज किए जाने वाले कामों के सैकड़ों कार्ड शामिल हैं। मैजिक बॉक्स के एक पायलट सत्र के दौरान बच्चों को अपने आप को ही आगोश में लेना था – कसकर और काफ़ी देर तक, और कहना था, “मुअअ, मैं अपने आप से प्यार करता हूँ!” जैसे-जैसे हम 6 से 9 वर्ष के बच्चों से 10 से 11 वर्ष के बच्चों की ओर बढ़े, हमने देखा कि खुद को आराम से और जोश के साथ आगोश में लेने का उत्साह काफ़ी कम होता गया। 10 साल के बच्चों की एक कक्षा में हमने एक बच्चे को धीरे से कहते सुना, “मैं अपने आप से प्यार नहीं करता।”

गरीबी की वजह से बच्चे, परिवार, समुदाय और देश के सामने बड़ी विचित्र व्यक्तिगत चुनौतियाँ पैदा होती हैं। बच्चे अक्सर विभिन्न प्रकार के मानसिक आघातों से गुज़रते हैं – वित्तीय मुद्दे, पारिवारिक कलह, कटुतापूर्ण अलगाव और मानसिक, भावनात्मक, यौन शोषण जिसमें डराना-धमकाना और मादक द्रव्यों का सेवन आदि शामिल हैं।

13-15 वर्ष (किशोर) आयु वर्ग में चार में से एक भारतीय बच्चा दुखी है; दस में से एक बेचैन है; 11 प्रतिशत अन्यमनस्क पाए गए हैं और उन्हें अपने काम पर ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई होती है तथा अन्य 10 प्रतिशत ने कहा कि उनका कोई करीबी दोस्त नहीं है।<sup>iii</sup>

जब मैंने नली कली की कक्षा में 6 से 8 साल के बच्चों से पूछा कि उन्हें किस बात से डर लगता है या दुख होता है, तो उन्होंने

कहा, “जब मेरे पिता मुझे पीटते हैं” या “जब मेरे पिता मेरी माँ को पीटते हैं” आदि। बहुत ही कम बच्चे साँपों या भूतों से डरते थे या पर्याप्त खिलौने न मिलने या ऐसी ही किसी अन्य अपेक्षित बात से दुखी थे।

किसी दूसरे स्कूल की एक कक्षा में, पाँचवीं कक्षा के 10 वर्षीय दो भाई एक-दूसरे को पीट रहे थे और लड़ रहे थे। जब उनसे बातचीत की तो वे हँसे और बड़ी ढिठाई से बताया कि उनके पिता उनकी माँ को पीटते हैं और कभी-कभी तो दादी को भी पीटते हैं। बहुत सारे बच्चे काफ़ी समय से ही घर में हिंसा का सामना कर रहे हैं।

सीएमसीए के इसी अध्ययन में 61 प्रतिशत बच्चों ने बताया कि उन्हें स्कूल में पीटा जाता है। तो ऐसे में इस बात की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती कि हम बच्चों में दया और समानुभूति की भावना को प्रोत्साहित कर सकते हैं। क्योंकि हम वयस्क लोग खुद उन पर चिल्लाते हैं, उन्हें पीटते हैं, चिढ़ाते हैं या अनुचित नामों से बुलाते हैं, शर्मिन्दा करते हैं और उनका अपमान करते हैं। जैसा कि जे. कृष्णमूर्ति ने लिखा है, “... जब हम तीखे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जब हम किसी व्यक्ति को सामने से हट जाने का इशारा करते हैं, जब हम भय के कारण किसी की आज्ञा का पालन करते हैं तो यह सब हिंसा है...।”

### बच्चों से प्यार करने वाले शिक्षक

आदिवासी स्कूलों के शिक्षकों के लिए एनसीईआरटी द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में, शिक्षकों ने बेहद कम आय वाली पृष्ठभूमि के बच्चों, उपेक्षित बच्चों और अपने दैनिक जीवन में अत्यधिक तनाव में रहने वाले बच्चों के साथ काम करते वक्त अपने सामने आने वाली चुनौतियों को साझा किया। मैं शिक्षकों की कठिनाइयों को समझ सकती थी, अतः मुझे उनसे सहानुभूति हुई। रोज़ाना ऐसी चुनौतियों का सामना करना हम सभी को चिड़चिड़ा बना सकता है! इसलिए कोई

आश्चर्य की बात नहीं कि कुछ शिक्षकों ने बच्चों की पिटाई को सही बताया और उन्हें लगता था कि ऐसा करना ज़रूरी है।

दूसरी ओर, यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि कार्यशाला में कुछ शिक्षक ऐसे भी थे जिनकी अहिंसा के प्रति बड़ी गहरी प्रतिबद्धता थी। वे अपने अनुभवों को साझा कर रहे थे और बड़ी शिष्टता और समानुभूति के साथ दूसरों को अपने नज़रिए पर राजी करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। शिक्षको, आप हिंसा के चक्र को तोड़ सकते हैं और आपको ऐसा करना चाहिए।

### कक्षा में सकारात्मक मनोविज्ञान

अरस्तू इस बात को मानते हैं कि हमारी खुशी हमारी भौतिक परिस्थितियों, समाज में हमारे स्थान और यहाँ तक कि हमारे रूप-रंग जैसे कारकों से प्रभावित हो सकती है। फिर भी वे कहते हैं कि खुशी का सम्बन्ध सदाचारी व्यवहार और सदाचारी आदत से है, भाग्य से नहीं: ऐसा व्यक्ति जो इस तरह के व्यवहार और आदतों को विकसित करता है, वह सन्तुलन और सही नज़रिए के साथ अपने दुर्भाग्य को सहन करने में सक्षम होता है, और इस प्रकार, उसे कभी वास्तव में दुखी नहीं कहा जा सकता।<sup>6</sup>

शोध से पता चलता है कि जब बच्चों का दिमाग़ रोज़मर्रा की जिन्दगी के तनाव से भरा होता है तो शिक्षा प्रभावित होती है। जिस तरह हमने इस वास्तविकता को पहचाना है फिर उसके मुताबिक़ अपनी नीतियाँ भी बनाई हैं कि कोई भी बच्चा भूखे पेट कुछ नहीं सीख सकता है और पोषण सीखने को प्रभावित करता है। इसी तरह हमारी प्रणाली और हमारे शिक्षकों को इस वास्तविकता को भी पहचानकर उसके मुताबिक़ निर्णय और व्यवहार करना चाहिए कि कोई भी दुखी या तनावग्रस्त बच्चा अपनी पूरी क्षमता से न तो सीख सकता है और न ही अपना विकास कर सकता है।

अपने विद्यार्थियों की मदद करने के लिए इन सरल, नियमित कार्यों और दैनिक अन्तःक्रियाओं का उपयोग करें ताकि वे :

- छोटी-छोटी चीज़ों में खुशी तलाशें
- प्रत्येक दिन/कक्षा अवधि की शुरुआत मुस्कान के साथ करें
- आभारी और कृतज्ञ रहें
- सकारात्मक रहें और हर स्थिति में सर्वश्रेष्ठ बात ही देखें
- वर्तमान क्षण में जिएँ
- खुद के साथ अच्छा व्यवहार करें
- ज़रूरत पड़ने पर मदद माँगें
- उदासी और निराशा को छोड़ दें
- सचेतनता का अभ्यास करें
- प्रकृति के सानिध्य में चहलकदमी करें
- हँसें और खेलने के लिए समय निकालें

शिक्षक अपने विद्यार्थियों की चारित्रिक मजबूती का निर्माण करने, उन्हें अपनी कठिनाइयों का सामना करने, अपनी शक्ति और अवसरों को समझने और उनकी सराहना करने, सकारात्मक और आशावान बने रहने और अपने लिए एक बेहतर और खुशहाल जीवन की आकांक्षा करने और उसके लिए प्रयास करने में मदद कर सकते हैं। यह आत्म-प्रेम (आत्मविश्वास, आत्म-जागरूकता, आत्म-सम्मान, आत्म-नियमन, आदि) ऐसे अच्छे नागरिक बनने की प्रक्रिया का एक अत्यावश्यक अंग है, जो दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील और सचेत हों।

### लैंगिकता और कक्षा

लैंगिकता पर सीएमसीए के सत्र करते समय हमने बच्चों की आँखों में आँसू देखे हैं। जब लड़कियाँ दिल दहला देने वाली कहानियाँ साझा करती हैं कि जब वे बीमार पड़ती हैं तो कैसे उनके माता-पिता उन्हें डॉक्टर के पास ले जाने के लिए कोई जल्दी नहीं करते हैं, लेकिन जब उनके भाई बीमार पड़ते हैं तो ऐसा नहीं होता। लड़कियों को कम अण्डे या कम दूध मिलता है या लड़कों को मांस का नरम हिस्सा मिलता है। वहीं लड़के बताते हैं कि जब उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे जल्दी से कमाई करना शुरू करें या जब उनसे बहादुर और हिम्मती होने की अपेक्षा की जाती है तो उन्हें कितना तनाव होता है। हम लैंगिकता से जुड़े विचारों को साझा करने और उन्हें चुनौती देने के लिए कहानियों और व्यक्तिगत अनुभवों का उपयोग कर सकते हैं। हमें इस तरह की बातचीत करने के लिए किसी महँगी सामग्री की आवश्यकता नहीं है – शुरुआत के लिए यह छोटा-सा सरल उदाहरण ही काफी है कि घर में केवल भाई को अण्डा दिया जाता है।

बच्चों को घर के कार्य सौंपते समय हमें सावधानी बरतनी चाहिए ताकि लड़कियाँ और लड़के कुछ भी करने के लिए खुद को तैयार और सक्षम महसूस करें। उदाहरण के लिए, लड़के स्कूल के समारोह के दौरान रंगोली सीखकर बना सकते हैं। लड़कियाँ स्कूल कार्यक्रम में साउंड सिस्टम को सम्भाल सकती हैं और तकनीकी पहलुओं का प्रबन्धन कर सकती हैं। हाँ, कुछ विरोध होगा और गलतियाँ होंगी, लेकिन उन गलतियाँ और खामियों से और ज्यादा गहरी सीख मिलेगी। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम लैंगिक व्यवहार सम्बन्धी रूढ़ियों को बनाए न रखें – उदाहरण के लिए, चोट लगने पर लड़कों को न रोने के लिए मजबूर न करें और लड़कियों को उछलने-कूदने या लड्डू नचाने से न रोके।

लैंगिक पहचान के बारे में जागरूकता जल्दी शुरू हो जाती है, इसलिए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लैंगिकता द्विआधारी नहीं बल्कि एक विस्तार है। अपनी कक्षाओं में

बच्चों से लैंगिक भूमिका और व्यवहार की अपेक्षाएँ निर्धारित न करें। बल्कि, कहानियों में निरूपित लैंगिकता भूमिकाओं को चुनौती दें और विद्यार्थियों को अपनी धारणाओं और विचारों की पड़ताल करने में मदद करें।

### कक्षा में विविधता

मिल-जुलकर सामंजस्य के साथ रहना और विविधतापूर्ण देश में परिवर्तन और विभिन्नताओं को अपनाना न केवल लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण कौशल है, बल्कि 21वीं सदी के कार्यस्थल सम्बन्धी कौशलों में भी इन्हें अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। शिक्षार्थियों के बीच अन्तर-सांस्कृतिक क्षमता के विकास को सुगम बनाने में शिक्षक सभी स्तरों पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। (बैरट और अन्य, 2014)<sup>vi</sup>

शिक्षको, आप इस संसार को कक्षा में लाने के लिए हर रोज 15 मिनट का समय निकाल सकते हैं! शिक्षा को चाहिए कि वह इन बातों को सम्बोधित करे – अज्ञात के प्रति अविश्वास या भय, हम दूसरों के बारे में क्या धारणाएँ रखते हैं और हम एक-दूसरे के बारे में क्या सीख सकते हैं आदि। छोटे बच्चों के लिए भोजन, संगीत, आविष्कार, यात्रा आदि ऐसे बढ़िया तरीके हैं जिनसे बाधाओं को तोड़ने और विभिन्नताओं को खुशी-खुशी अपनाने में सहायता मिल सकती है।

उदाहरण के लिए, ग्लोब को घुमाकर/ दुनिया के नक्शे पर ही अलग-अलग जगहों की 'यात्रा' करें या अलग-अलग प्राकृतिक दृश्य देखें। जीवन के विभिन्न तौर-तरीकों और विभिन्न प्रकार के लोगों (उनके रूप, भोजन, कपड़े, उच्चारण, भाषाओं) को देखने और जानने के लिए पत्रिकाओं और वीडियो का उपयोग करें। इस तरह अपरिचित परिचित हो जाते हैं और *हम और वे* के विचार पिघलने लगते हैं! इस मूलाधार की सहायता से हम बाद के वर्षों में स्कूल में समानता, भेदभाव आदि पर अधिक चुनौतीपूर्ण बातचीत करने की ओर बढ़ सकते हैं।

### प्रकृति और कक्षा के साथ सामंजस्य

बच्चे को कीड़े मारना, जानवरों को छेड़ना और पत्थर मारना, घायल, डरे हुए या भूखे जानवरों की उपेक्षा करना कौन सिखाता है? वे व्यवहार सीखे जाते हैं और केवल सार्थक शिक्षा ही इस बात में बच्चों की मदद कर सकती है कि वे सीखी हुई बातों को *अनसीखा* करें, और कुछ बातों को *पुनः सीखें*।

घरों में पाई जाने वाली मकड़ियाँ, छिपकली, चींटियाँ, मधुमक्खियाँ, पक्षी, सामुदायिक पशु, पेड़ और पौधे बच्चों में जीवन के प्रति संवेदना के इस मौलिक कर्तव्य का पोषण कर सकते हैं।



अपने स्कूल के नियमित दिनों में कुछ शक्तिशाली गतिविधियों को शामिल करें, जैसे- पक्षियों को दाना खिलाना, सामुदायिक पशुओं को खिलाना, पौधों और पेड़ों की देखभाल करना। यहाँ तक कि कक्षा की दीवारों पर मौजूद छिपकलियों और खेल के मैदान में बनी चींटी की बस्तियों का नामकरण भी किया जा सकता है! ऐसी बातें बच्चों को यह सिखाती हैं कि अपने पर्यावरण की देखभाल करना सिर्फ विज्ञान का विषय नहीं है बल्कि मानवीय ज़िम्मेदारी है।

जो बच्चे पक्षियों, चींटियों और कुत्तों पर ध्यान देते हैं और उनकी देखभाल करते हैं, वे जंगल की मुख्य प्रजातियों और खुद अपने कल्याण के बीच गहरा सम्बन्ध देख पाते हैं। इस प्रकार हम अपने विद्यार्थियों को उम्र के साथ-साथ सह-अस्तित्व और स्थायित्व के साथ अधिक गम्भीर और सक्रिय रूप से जुड़ने में सक्षम बना सकते हैं।

### बाल अधिकार, कर्तव्य और कक्षा

कक्षा के अनुभव बच्चे के लिए लोकतंत्र के पहले अनुभवों में से एक होते हैं। कोई बच्चा सड़क पर कचरा फेंकना या फिर सार्वजनिक सम्पति या विरासत स्थलों को बिगाड़ना कहाँ से और कैसे सीखता है? बारह साल की उम्र में किसी बच्चे को मोटरबाइक चलाना क्यों सही लगता है? युवा वयस्कों को ऐसा क्यों लगता है कि नियम तोड़े जाने के लिए ही होते हैं? गलत नागरिक व्यवहार कहाँ और कैसे सीखा जाता है और इसे कैसे छोड़ा जा सकता है?

लोकतंत्र के बारे में हम अच्छी तरह से तब सीखते हैं जब उसका अनुभव करते हैं। अक्सर वयस्क लोग दृढ़ता को अहंकार, असहमति को अवज्ञा मानने की भूल करते हैं और अनुशासन को, निर्विवाद आज्ञाकारिता एवं अनुपालन के रूप में देखते हैं।



सामान्य ज्ञान हमें बताता है कि जिन विद्यार्थियों के पास स्कूल में पर्याप्त अवसरों की कमी होती है, उनसे हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वे सत्ता के साथ बातचीत-व्यवहार कर सकें। या उन पर शासन करने वाले नियमों को बनाने में अपनी यथोचित राय रख सकें, ताकि वे ऐसे सक्रिय नागरिकों के रूप में उभरें जो अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हों या अपने अधिकारों को सुरक्षित कर सकते हों! इसकी सम्भावना कम होती है कि जिन बच्चों को मारा-पीटा जाता है, वे बड़े होने के बाद सत्ता या सरकार के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ने में सक्षम हो पाएँ। जिन लड़कों और लड़कियों को कक्षाओं में अलग कर दिया जाता है, उनसे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे व्यक्तिगत रूप से और अपने कार्यक्षेत्र में एक स्वस्थ पारस्परिक सम्मानपूर्ण सम्बन्ध बना पाएँगे या अपने जीवन में ज़िम्मेदारी के साथ विकल्पों को चुन पाएँगे।

नियम बनाने में शिक्षक सभी स्तरों पर बच्चों को शामिल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों को शौचालयों को साफ़ रखने, स्कूल में भोजन की बर्बादी न होने देने, कक्षा में बहुत अधिक शोर को नियंत्रित करने जैसी चुनौतियों को हल करने में शामिल करें। जब बच्चे सह-निर्माण करते हैं, सह-गठन करते हैं और समाधान खोजने के उत्तरदायित्व को साझा करते हैं तो वे लोकतंत्र का अनुभव करते हैं और यह सीखते हैं कि स्वतंत्रता ज़िम्मेदारियों के साथ आती है। इस मूलाधार से हम उनमें बाद के स्कूली वर्षों में एक नागरिक के अधिकारों और कर्तव्यों की समझ बना सकते हैं।

### निष्कर्ष

शिक्षक-विद्यार्थी अन्तःक्रिया की रूपान्तरणकारी शक्ति का कोई विकल्प नहीं हो सकता। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में मानवीय सम्बन्ध महत्वपूर्ण होते हैं। मैंने कक्षाओं में खूब सौजन्यता देखी है। ऐसे शिक्षक हैं जो प्रेम और धैर्य का परिचय देते हैं, साफ़ नज़र आता है कि वे बच्चों की संगति

का आनन्द लेते हैं। उनकी आवाज़ में हँसी और आनन्द की खनक व आँखों में चमक होती है! बच्चों को खुशहाल करने और लोकतांत्रिक कक्षाओं व स्कूलों के निर्माण के लिए हमें महँगी सामग्री, विस्तृत प्रशिक्षण कार्यक्रमों, ढेर सारे समय या पाठ्यक्रम से हटने की आवश्यकता कतई नहीं है।

हमें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो कक्षा और स्कूल में सकारात्मक और सशक्त अनुभव प्रदान करें – ऐसे शिक्षक जो दैनिक जीवन के कार्यों और चुनौतियों को ऐसे अवसरों में

बदल सकें जिनके माध्यम से युवा और बच्चे चिन्तनशील, विचारशील और सक्रिय नागरिक बन सकें। हमें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो उन सभी माँगों को आशा, उम्मीद और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ पूरा कर सकें, जिसकी अपेक्षा उनसे की जाती है। हमें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जिन्हें अपने काम का जुनून हो और जो बच्चों से प्यार करते हों! और यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास ऐसे अनेक-अनेक शिक्षक हैं।

- i Children's Movement for Civic Awareness (CMCA) is a nonprofit organization, head-quartered in Bengaluru. They work towards transforming children and young people into active citizens for an inclusive and sustainable India. Our research-backed pro-gram is run in schools, colleges and rural youth clubs. (cmcaindia.org)
- ii Yuva Nagarik Meter – Young Citizen National Survey. (2015). (pp. 1-60, Publication). Bengaluru, KA: Children's Movement for Civic Awareness (CMCA).
- iii Mental health status of adolescents in South-East Asia: Evidence for action. (2017). World Health Organization, New Delhi: Regional Office for South-East Asia; 2017. Licence: CC BY-NC-SA 3.0 IGO.
- iv Krishnamurti, J. (1969). Chapter 6. In Freedom from the known. Harper & Row. Retrieved from <http://jiddu-krishnamurti.net/en/freedom-from-the-known/1968-00-00-jiddu-krishnamurti-freedom-from-the-known-chapter-6>
- v Aristotle on happiness – Happiness is not a state but an activity. (2013). Psychology Today. Retrieved from <https://www.psychologytoday.com/us/blog/hidden-and-see/201301/aristotle-happiness>
- vi Barrett, M., Byram, M., Lázár, I., Mompoin-Gaillard, P. and Philippou, S. (2014). Developing Intercultural Competence through Education. Pestalozzi Series No. 3. Strasbourg, Council of Europe Publishing.



प्रिया कृष्णमूर्ति चिल्ड्रन्स मूवमेंट फ़ॉर सिविक अवेयरनेस (CMCA) की सह-संस्थापक हैं। प्रिया को खुले दिल और दिमाग की सहज अच्छाई व क्षमता में गहरा विश्वास है। उन्होंने पाया कि सबसे अच्छा यही होगा कि इन गुणों का पोषण बच्चों में किया जाए। उन्हें कक्षाओं व संस्थाओं में नागरिकता और जीवन-कौशल से जुड़े कार्यक्रम और विषयवस्तु की रचना व शिक्षा में दो दशकों का अनुभव हासिल है। उनसे [priya@cmcaindia.org](mailto:priya@cmcaindia.org) पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल